नील माधव

Neel Madhav

एक समय की बात है, सात समुन्द्र पार एक छोटा-सा राज्य था। वहां आदित्यसेन नाम का राजा राज्य करता था। आदित्यसेन विद्वानों, संगीतज्ञों और कलाकारों का आदर करता था। कई कलाकार और संगीतज्ञ तो उसके साथ महल में ही रहा करते थे। उन्हें अपने निकट रखने में आदित्यसेन को सुख मिलता था।

आदित्यसेन का एक मित्र ऐसा भी था, जो उससे बहुत कम मिलता था, उसका नाम नील माधव था। राजा ने नील माधव को कई बार कहा कि वह गरीबों के साथ रहने के बजाए उसके साथ महल में आकर रहे। लेकिन नील माधव इसके लिए कभी तैयार नहीं हुआ।

एक दिन की बात है, राजा ने अपने महल में एक बड़ी दावत का आयोजन किया। उसमें नगर के सभी जाने-माने लोग बुलाए गए। आमंत्रित लोग दावत के दिन सजधज कर महल में आने लगे।

Once upon a time, beyond the seven seas, there was a small kingdom. There ruled a King named Adityasen. He had great respect for scholars, musicians and artists. Many of them were living with him in his palace itself. It gave him great pleasure to have them around him.

Besides these scholars, musicians and artists, there was one fast friend of Adityasen, who used to meet the King once in a while. His name was Neel Madhav. He was a learned man. The King had often asked Neel Madhav to come and stay in his palace instead of living amongst the poor. But Neel Madhav never agreed.

One day, the King gave a banquet

मुख्य द्वार की ओर अतिथियों के बीच में नील माधव भी था। मगर जैसे ही वह महल के अन्दर जाने लगा, द्वारपाल ने उसे रोक दिया। उसने कारण पूछा तो द्वारपाल ने कहा ''राजा का आदेश है, कोई भी ऐरा-गैरा भीतर न पहुंच जाये।''

नील माधव को तुरन्त समझ में आ गया कि उसके साधारण वस्त्र ही उसे ऐरा-गैरा बता रहे हैं। वह तुरन्त वहां से लौट गया और अपने घर आकर उसने कीमती वस्त्र पहन लिए। इस तरह सजधज कर वह फिर उसी द्वार पर आ गया। इस बार द्वारपाल ने उसे नहीं रोका।

थोड़ी देर बाद भोजन परोसा गया। तरह-तरह के पकवान खाने के लिए रखे गये। आमंत्रित लोगों ने खाना शुरू किया, मगर नील माधव ने पकवान खाने के बजाए, उन्हें अपने वस्त्रों की जेब में भरना शुरू किया। राजा ने यह देखा, तो उसे आश्चर्य हुआ।

in his palace. He invited all the well-known people of his kingdom. Neel Madhav was also seen at the main gate of the palace among the invitees who were dressed in their finest clothes. As soon as Neel Madhav tried to step into the palace the sentry at the gate stopped him. Neel Madhav asked the reason. He was told, he was not fit to be a guest.

Neel Madhav understood immediately that it must be due to his plain and simple clothes. He at once turned around, went home, wore his best clothes and came back to the palace. This time he had no difficulty in entering the palace.

After a while, food was served.

वह अपने स्थान से उठकर आया और नील माधव से बोला:

''मित्र! तुम यह क्या कर रहे हो?''

''कुछ नहीं, अपने वस्त्रों को भोजन करवा रहा हूँ।''

''तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आयी।''

''बात बहुत साफ है, क्योंकि आपने मुझे नहीं इन वस्त्रों को आमंत्रित किया है।''

और इसके साथ ही नील-माधव ने द्वार पर उसके साथ हुए व्यवहार का उल्लेख कर दिया। राजा को अपनी भूल का पता चल गया। उसने नील माधव को गले लगाया और कहा कि व्यक्ति की महानता वस्त्रों से नहीं, उसके काम से जानी जाती है।

There were a variety of dishes and delicacies. The invitees began to eat. But Neel Madhav, instead of eating, filled up his pockets with the food. The King was perplexed when he noticed Neel Madhav.

He walked up to Neel Madhav and asked,

"What are you doing?"

"I am feeding my clothes."

"But why?"

"Simply because it's not I, who is invited, but these clothes."

Saying this Neel Madhav explained to the King what had transpired between him and the sentry at the main gate.

The King realised his folly. He hugged Neel Madhav and said,

"A man is known by his deeds, not clothes."

महानिदेशक, सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
15-ए, सेक्टर 7, द्वारका,
नई दिल्ली - 110075 द्वारा प्रकाशित

अरावली प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,
डब्लू - 30, ओखला इन्डिस्ट्रयल एरिया, फेस 2,
नई दिल्ली-110 020 द्वारा मुद्रित

Published by Director General
Centre for Cultural Resources and Training
15-A, Sector 7, Dwarka,
New Delhi - 110075

Printed at
Aravali Printers & Publishers (P.) Ltd.
W-30, Okhla Industrial Area, Phase - 2
New Delhi - 110020

चित्र व आलेख : विजय परमार
Illustrations and text : Vijay Parmar